**International Journal of Hindi Research**
**ISSN: 2455-2232**
**Impact Factor: RJIF 5.22**
**www.hindijournal.com**
**Volume 3; Issue 5; September 2017; Page No. 29-34**

# रमेश चन्द्र शाह के उपन्यासों में ग्रामीण एवं शहरी जीवन

**डॉ. किरन**
Research Scholar, P.G. College Bageshwar, Uttarakhand, India

## प्रस्तावना

उपन्यास लेखन एक कला है। अत्यन्त कुशल उपन्यासकार भी अपनी कलाकृति में जीवन की अनुभूति ही करता है। कथानक के रेखाचित्र में जीवन को बांधना ही उसकी कला कुशलता है। जीवन एक सतत् प्रवाहमय सरिता है। अतः ये रेखाएँ सिमिटिती–बढ़ती रहती है, धूमिल–चमकीली भी होती रहती हैं– इन्हीं से जीवन–प्रयोजन भी रसमय होता है। अतः उपन्यासकार का क्षेत्र और शिल्प दोनों ही व्यापक होते हैं। हमें कथानक का रूप स्थापित करना पड़ता है, एक आकृति हमें बनानी पड़ती है। हम मात्र कहानी कहकर उपन्यास को न तो रोचक बनाते हैं और न ही उपादेय। उपन्यास को जीवन्त बनाने के लिए रूप वैशिष्ट्य होना आवश्यक है।

पद्मश्री रमेश चन्द्र शाह का जन्म उत्तराखण्ड की सुरम्य सांस्कृतिक नगरी, अल्मोड़ा में बैशाख शुक्लपक्ष त्रयोदशी, मई 1937 में हुआ। साहित्य की हर विधा उपन्यास, कहानी संग्रह, निबन्ध, संस्मरण, यात्रा–वृत्तान्त, डायरी, कविता संग्रह आदि में अपनी लेखनी चलाई है। डॉ. रमेश चन्द्र शाह ने अभी तक कुल ग्यारह उपन्यास 'गोबर गणेश' 1978, 'किस्सा गुलाम' 1986, 'पूर्वापर' 1990, 'आखिरी दिन' 1992, 'पुनर्वास' 1995, 'आप कहीं नहीं रहते विभूतिबाबू' 2001, 'सफेद परदे पर' 2006, 'कमबख्त इस मोड़ पर' 2007, 'विनायक' 2010, 'असबाब–ए–वीरानी' 2011, 'कथा सनातन' 2012 आदि लिखे हैं। डॉ. शाह का जीवनानुभव काफी व्यापक है। उनके उपन्यासों में विस्तृत फलक का सफल निर्वाह हुआ है।

शाह जी ने अपने जीवन के अनुभवों को उपन्यासों में उकेरने का प्रयास किया है, चाहे वह ग्रामीण जीवन के अनुभव हों या शहरी जीवन के अनुभव। उन्होंने गांव और शहर में अपना जीवन व्यतीत किया है। इन्हीं अनुभवों को हम इनके उपन्यासों में देखते हैं। उपन्यासकार बड़ी सतर्कता से सामाजिक स्थितियां, रुचि अरुचि, नए फैशन से लेकर राजनैतिक, धार्मिक, वैज्ञानिक या विज्ञापनिक परिदृश्यों पर ध्यान देता है। ऐतिहासिक उपन्यासों का तो यह मूक आधार तत्व ही माना गया है। डॉ. रमेश चन्द्र शाह के उपन्यासों में ग्रामीण एवं शहरी जीवन का वर्गीकरण यहां पर किया जा रहा है–

## ग्रामीण जीवन

डॉ. शाह का अनुभव संसार, गाँव का अधिक है। बाल्यकाल से ही प्रकृति के सहचर्या में उन्हें वहीं से ऊर्जा मिली थी। उन्होंने अपनी रचनाओं में गाँव समाज की विराट संवेदनाएँ समेटी हैं। उन्होंने ग्राम्य जगत को हू–बहू अपनी रचनाओं में चित्रित किया है। डॉ. शाह के अधिकांश उपन्यासों में ग्रामीण सहज, सरल तथा भोले स्वभाव से युक्त चित्रित हुए हैं। 'गोबर गणेश' तथा 'किस्सा गुलाम' में गाँव की सहजता, सरलता, भोलापन बड़े कौशल से अभिव्यक्त हुआ है।

ग्रामीण अंचलों में जातीय कट्टरता व्याप्त है। शहरों में आर्थिक कठिनाईयाँ एवं तद्जन्य विषमताएँ अधिक हैं। गाँव में निर्धनता तो है, पर उदरपूर्ति हो ही जाती है। 'किस्सा गुलाम' उपन्यास में इसका उदाहरण देखा जा सकता है।

डॉ. शाह ने ग्रामीण आंचल के सामाजिक स्नेह संबन्ध तथा अतिथि सत्कार आदि का भी चित्रण किया है। पर्वतीय अंचल के निवासी प्रायः सरल, भोले, गाम्भीर्य से युक्त तथा संवेदनशील हैं। उनमें श्रमशीलता, उदारता व सदाशयता होती है। गाँवों में एक व्यक्ति पर विपदा पड़ने पर पूरा गाँव उसका साथ देता है। कृषि कार्य में भी एक दूसरे की मदद की जाती है। 'गोबर गणेश', 'किस्सा गुलाम', पुनर्वास आदि उपन्यासों में इस प्रकृति के दर्शन होते हैं। गाँव में अतिथि को देवतुल्य माना जाता है। उसका यथोचित आदर सत्कार किया जाता है। व्यक्ति के श्रेष्ठ कार्यों, आचरण व सामाजिकता के कारण समाज में उसका बहुत मान सम्मान होता है।

डॉ. शाह ने कुमाऊँ के अल्मोड़ा, नैनीताल, हल्द्वानी, देहरादून, रुद्रपुर, रानीखेत, हरिद्वार तथा बागेश्वर आदि स्थानों का चित्रण किया है किन्तु उनकी विशेष रुचि अपनी जन्मभूमि अल्मोड़ा तथा उसके समीपवर्ती ग्राम्य अंचल रहे हैं।

डॉ. शाह के उपन्यासों में कुमाऊं अंचल के सामाजिक व्यवस्था पर अनेक भौगोलिक, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, प्रजातीय धार्मिक, राजनीतिक एवं दार्शनिक तत्वों के साथ उदान्त सांस्कृतिक तत्वों का समन्वय भी देखने को मिलता है। डॉ. शाह के अधिक उपन्यास ग्रामीण जीवन तथा समाज पर ही आधारित हैं। आज ग्रामों में अनेक परिवर्तन दृष्टिगत हो रहे हैं। 'पुनर्वास' उपन्यास में शाह जी ने बदलते हुए अपनी जन्मभूमि आलमपुर का चित्रण किया है–"मेरा यह आलमनगर पहले से तिगुना तो हो ही गया है। स्थापत्य भी इसका अजीब ढंग से बिगड़ गया है। अपराध, जिसका यहाँ नामोनिशान तक नहीं था, वह भी तेजी से पनपने लगा है। पानी की कमी के कारण नालियाँ रूंधी रहती हैं जिससे मच्छर भी पैदा होने लगे हैं, जिनकी पहले यहाँ कल्पना भी नहीं की जा सकती थी। कालगति ने निश्चित ही मेरी जन्मभूमि को भी नहीं बख्शा है।"[1]

डॉ. शाह के उपन्यासों में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्र वर्णों की चित्रण मिलता है। साथ ही इनके आपसी भेदभाव को भी चित्रित किया है। हिन्दू धर्मानुसार कुमाऊँ में भी ब्राह्मण तथा क्षत्रिय जातियाँ श्रेष्ठ मानी जाती हैं। वैश्य तथा शूद्र को निम्न जाति में रखा गया है। शूद्र के लिए हरिजन तथा डोम शब्द प्रयुक्त हुए हैं। "गोबर गणेश' उपन्यास में "नारायण डूम है" वाला शीर्षक इसका पुखता उदाहरण है। इन वर्णों के लोग आपस में ऊँच–नीच की भावना से सम्पृक्त हैं। अछूत सबसे निम्न, उपेक्षित तथा समाज का दयनीय तबका है। "वो डूम है मास्साब ब्राह्मण हैं। डूम को कैसे छुएँगे?"[2] अपने उपन्यासों में जातिगत शब्दों का प्रयोग कर पर्वतीय समाज के यथार्थ रूप को उजागर करने का प्रयास लेखक का रहा है।

जहाँ डोम रहते हैं उस बस्ती को डुमौड़ा कहा जाता है। "डुमौड़े के लड़के जैसे गन्दे होते हैं, वैसे हवेली बाजार के लड़के नहीं हैं। डुमौड़े के लड़कों के पास कोई फील्ड भी नहीं है खेलने को और बाजार के लड़के उन्हें अपने साथ नहीं खिलाते। डुमौड़े के लड़कों के साथ गली में कंची खेलना बिलकुल अच्छा नहीं लगता कुन्दन को।"[3]

लोगों ने अपने पुश्तैनी कारोबार, धन्धों को छोड़कर दूसरे कार्यों में भागीदारी सुनिश्चित कर ली है। अन्यथा वह पलायन भी कर गये हैं परम्परागत हस्तशिल्प अब दिखाई नहीं देते। डॉ. शाह के उपन्यास 'किस्सा गुलाम में कुतुवा तथा चरखा का जिक्र हुआ है नारायण राम अपनी पत्नी से कहता है– "कहाँ एक दिन वो था जब दिन–भर चरखा लेके बैठी रहती थी। मुझसे भी अच्छा कातती थी। और अब मेरे कुतुवे को आग लगा रही है।"[4]

ग्रामीण वातावरण भी आज शहरों का मुख ताकता है। हर चीज क्रय की जाने लगी है। कुटीर उद्योग नगण्य या समाप्त हैं। जो रह भी गये हैं, मरणासन्न हैं। कुल मिलाकर ऊन व्यवसाय, चर्म उद्योग, ताम्र उद्योग सिमट गये हैं। यहीं कारण है कि कुर्मांचल की युवा शक्ति मैदानी क्षेत्रों में पलायन कर रही है। परिवार चलाने का गुरूतर दायित्व स्त्री के कन्धों पर आ गया है। इसका उदाहरण 'किस्सा गुलाम' उपन्यास में मिलता है। नारायण राम किस प्रकार घर का कारोबार अपनी पत्नी के कंधों पर छोड़कर शहर में नौकरी करने चला जाता है।

पर्वतीय ग्रामीण स्त्री–पुरुष प्रकृति से निरन्तर संघर्षरत हैं। उनके दैनान्दिक जीवन में कठिनाईयाँ बदस्तूर जारी हैं, जीविका के स्रोत सीमित हैं। सामने कार्यों का विकट बोझ है, खेत–खलियान का कार्य, जंगल से चारा, लकड़ी लाना, मवेशियों, वृद्धों व बच्चों की समुचित देखभाल तथा घर के सभी कार्यों में वह व्यस्त रहती हैं। 'किस्सा गुलाम', 'गोबर गणेश' उपन्यासों में इसका चित्रण हुआ है।

कहा जा सकता है कि डॉ. शाह जी ने अपने उपन्यासों में ग्रामीण संस्कृति का भी प्रसंगानुकूल वर्णन किया है। ग्राम्य मनोविज्ञान का पूर्ण ध्यान रखते हुए ग्राम्य संस्कृति के विविध पहलुओं को लेखक ने अपने उपन्यासों में चित्रित किया है। "नए–पुराने स्थापत्य का इतना बेमेल मिश्रण आपको कहीं नहीं दिखाई देगा। एक तरफ पत्थर और लकड़ी के असली पुराने घर हैं– सुघड़–सुडौल और अद्भुद नक्काशीदार दरवाजों–खिड़कियों वाले और दूसरी ओर सीमेन्ट के बदसूरत ढूह। कोई मुकाबला है दोनों का?"[5]

डॉ. शाह ने 'एक सार्वजनिक भाषण' के माध्यम से गाँवों में प्रचलित रीति–रिवाज जो ग्रामीण समाज के लिए अहितकर हैं, उन्हें त्याग देने का आह्वान किया है। "हमारा समूचा राष्ट्रजीवन जिस भ्रष्ट जिस गैर–जिम्मेदारी, काहिली और परोपजीवी अहंकार–विमूढ़ता, प्रवृत्तियों की गिरफ्त में है, उन्हें आप यथावत समझे, उनका यथातथ्य आकलन करें और तब उनके प्रतिकार की दिशा में सचेष्ट हो यही इष्ट है।"[6]

ग्रामीण जीवन की धुरी, रीढ़, नारी है, अतः ग्रामीण संस्कृति में नारी की उदान्त छवि को सहज–स्वाभाविक रूप में समक्ष रखा है। ग्राम्य जीवन में भी परिवर्तन दृष्टिगोचर हो रहे हैं। लेकिन यह परिवर्तन समाजपयोगी हों– लेखक की यही कोशिश रही है। कुमाउंनी संस्कृति भारतीय संस्कृति की ही एक क्षेत्रीय संस्कृति है अपनी विशिष्टताओं के कारण कुमाउंनी संस्कृति की अपनी अलग पहचान है, जो आज भी धरोहर के रूप में जीवन्त है।

डॉ. शाह के उपन्यासों में ग्रामीण धार्मिक चेतना की विविध रूप में अभिव्यक्ति हुई है। शाह जी धार्मिक वातावरण में ही पले बढ़े। उन्होंने बाल्यकाल से ही धार्मिक कर्मकाण्डों, पूजा विधानों को देखा है। "माँ चार–साढ़े चार बजे ही उठ जाती होगी। तभी तो, जब वह नहा–धोकर, देवताओं को भी नहलाकर पूजा में बैठती थी। और घण्टी बजाती थी– तभी तो दीना की सुबह होती थी।"[7]

स्थानीय देवी–देवताओं पर उन्हें असीम, अटूट आस्था है। उनके उपन्यासों में नन्दा देवी, कसार देवी, चितई गोलू, जागेश्वर, खगमराकोट, वनदेवी, धोलीडाने का मन्दिर आदि क्षेत्रीय देवी–देवताओं का वर्णन मिलता है। उनकी रचनाओं में धार्मिक आस्था पर्याप्त दिखाई पड़ती हैं। विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्र की विविध धार्मिक आस्थाओं का उन्होंने सविस्तार स्वाभाविक रूप में चित्रण किया है। 'गोबरगणेश' उपन्यास में सरू कहती है– "शहर से ऊपर एक चीड़–ढके पर्वत की चोटी पर कसार देवी का मन्दिर है। माँ ने एक काम भी सौपा है। छमाही में विनायक के पास होने की खुशी में देवी को सिन्नी चढ़ाने का।"[8]

"वैसे माँ ने कहा था चितई जाने को। चितई में गोल्ल देवता हैं। गोल्ल देवता की ही सबसे ज्यादा मान्यता है। वे यहाँ के आदि देवता और नगर देवता हैं।"[9]

गाँव के ऊँचे–ऊँचे पर्वतों एवं पहाड़ों में देवताओं का वास होता है। क्योंकि यह स्थान सबसे शुद्ध एवं स्वच्छ होते हैं। प्रकृति के सुरम्य वातावरण में इनका वास होता है। 'गोबर गणेश' उपन्यास में ऐसे क्षेत्रीय देवी–देवताओं एवं मन्दिरों का इस प्रकार वर्णन हुआ है विनायक अपने मित्र त्रिभुवन के साथ घूमने निकलते हैं वह त्रिभुवन को बताता है– "जहाँ नन्दादेवी का शिखर दिखाई दे रहा उसकी बगल में वो पहाड़ है न उसके ऊपर मन्दिर का कलश चमक रहा है। वो कसार देवी का मन्दिर है। बहुत बढ़िया जगह है, पूरा अल्मोड़ा वहाँ से दिखाई पढ़ता है।"[10]

डॉ. शाह ने ग्रामीण आंचलिक धार्मिकता के साथ–साथ आर्थिक जीवन का भी चित्रण किया है। शाह जी का बचपन भी आर्थिक संकटों से ग्रसित था। उन्हें बहुत अधिक आर्थिक दबावों का सामना करना पड़ा अपनी रचनाओं में भी उन्होंने आर्थिक अभावों से जूझते निम्न, मध्यम वर्ग की पीड़ा को अभिव्यक्त किया है। 'गोबरगणेश' उपन्यास में विनायक का चित्रण इस प्रकार हुआ है– "विनायक ने अपनी एकमात्र पैंट... खाकी जीन की पहन रखी थी जिसके पीछे टल्ला डाल रखा था और मलेशिया की कमीज पर दीदी का बुना हुआ स्वेटर डाल रखा था। जूता जरूर थोड़ा फटा हुआ था।"[11]

उन्होंने प्रायः हर वर्ग की आर्थिक स्थिति का चित्रण अपने उपन्यासों में किया है। चूंकि डॉ. शाह जी के उपन्यास अधिकांशतः कुमाऊँ के ग्राम्य वातावरण से संन्दर्भित हैं। इसलिए ग्रामीण आर्थिक जीवन का स्वाभाविक एवं प्रसंगानुकूल चित्रण उनके उपन्यासों में मिलता है। किस्सा गुलाम' उपन्यास के पात्र नारायण राम का परिवार बड़े आर्थिक संकटों से घिरा है। उसकी पत्नी कहती है– "सौ रुपल्ली के लिए दिन–भर गाँधी आश्रम वालों की ड्यूटी बजाते हो कि नहीं? कौन सी इज्जत कर देते हैं तुम्हारी वो? इज्जत ही करने वाले होते तो इस तरह तुमको आज यहाँ, कल वहाँ, भटकाते? पूरी तनख्वाह नहीं देते?"[12]

आर्थिक संकट में रहते हुए परिवार में एक दूसरे का हौसला बढ़ाया जाता है। नारायण राम अपनी पत्नी से कहता है– "बिक्री बढ़ेगी तो तनख्वाह भी बढ़ जाएगी। तू फिकर मत कर रामी, सब ठीक हो जाएगा।"[13]

ग्रामीण अंचल में शिक्षा की बात करे तो वहाँ की शिक्षा पूर्णतः परम्परागत तथा सरकारी अनुदान पर आधारित है, वहीं शहरों में व्यक्तिगत महंगे शैक्षिक संस्थान है। विविध पाठ्यक्रमों को पढ़ने के लिए कोचिंग स्थान है। इसका उदाहरण 'गोबरगणेश' उपन्यास में मिलता है। विनायक की प्रारम्भिक शिक्षा गाँव में होती है। अच्छी पढ़ाई के लिए उसे नैनीताल भेज दिया जाता है। वहीं से विनायक का शैक्षिक जीवन उभर कर आता है। उसकी प्रतिभा के लिए

नैनीताल भी छोटा पड़ गया। जब अलमोड़ा छोटा पड़ा था तो मथुर काका के लिए छोटा पड़ा। क्योंकि मथुर काका ने ही विनायक को जबरदस्ती नैनीताल भेजा था। इस बार मथुर काका को कुछ नहीं कहना पड़ा विनायक ही खुद अपने आप इस निष्कर्ष पर पहुँच गया कि "नैनीताल उसकी प्रतिभा के लिए छोटा पड़ गया है और अब वह इलाहाबाद ही उसे चमका सकता है।"[14]

गाँवों के मेधावी नौनिहाल सरकारी विद्यालयों में ही अपनी पढ़ाई पूरी करते हैं। ग्राम्य क्षेत्रों में शिक्षा अध्यापकीय शिक्षण पर आधारित है। डॉ. शाह के उपन्यास 'किस्सा गुलाम' एवं 'गोबर गणेश' में ग्रामीण अंचल के विद्यालयों तथा कक्षाओं का चित्रण मिलता है।

डॉ. शाह ने ग्रामीण अंचल की पहाड़ियों के छोटे–छोटे चित्रण पर्वतीय सौन्दर्य के साकार बिम्ब उपस्थित करते हैं। "पल भर में चोटियाँ लाल हो जाती हैं फिर सुनहली पीली... अग्निशिखाओं सी, जैसी किरणों ने लुके–छिपे शिखरों की समिधा छूकर उकसा दी हो"[15]

"भेड़ों की नदी बह गयी है... जैसे बलढोटी का पूरा जंगल ही नींद से उठकर सरकने लगा हो।"[16]

'गोबर गणेश' उपन्यास में ग्रामीण अंचल की पहाड़ियों, पर्वतीय एवं झरनों के सौन्दर्य का वर्णन बड़े मन भावन तरीके से इन पंक्तियों में मिलता है–

"नींद की नदी में उगा/कलरव करता झरना एक
धँसता अपने भीतर अपने भीतर जहाँ
खिड़की पर पहली पहली बर्फ से घिरा बच्चा
और... उससे भी ज्यादा
अवाक्
एक पहाड़।"

डॉ. शाह ने विशिष्ट एवं अद्वितीय ग्रामीण वातावरण का जीवन जिया है, भोगा है अपने अनुभव संसार से ही उन्होंने बहुत से रचनाओं का सृजन किया है। इनके उपन्यास एवं कहानियाँ समाज के हर वर्ग से ताल्लुक रखते हैं। लेकिन ग्रामीण निम्न–मध्य वर्ग के पात्र उनके बहुत अजीज तथा करीब हैं। अनुभवों व नैतिकता का खजाना उनके पास है।

**शहरी जीवन**

शहरों में ऊँची–ऊँची इमारतें, बड़े–बड़े सिनेमाघर, भीड़ भरे बाजार, बड़े–बड़े मॉल होते हैं। चौड़ी काली सड़कों पर बसे, कार और मोटर साइकिलें दिन रात दौड़ती रहती हैं। मॉलों में हर प्रकार के सामान के बड़े–बड़े शो–रूम होते हैं। वहाँ स्वचालित सीढ़ियाँ जो एक तरफ ऊपर से नीचे और दूसरी तरफ नीचे से ऊपर चलती रहती हैं। इन मॉलों में चाय–कॉफी पीते, बातें करते, शोर मचाते हुए लोगों की काफी भीड़ रहती है। वहाँ का भोजन पिज्जा, बर्गर, सैंडविच और चाउमिन बड़े चाव से खाते हैं। शहरों में लोग सामान खरीदने पर कुछ लोग रुपये के स्थान पर क्रेडिट कार्ड से भुगतान करते हैं।

शहरों में भीड़–भड़ाके के कारण यात्रा करना काफी कठिन होता है। लोग मेट्रो से यात्रा करते हैं। मैट्रो में काफी भीड़ होती है। शहर की भाग–दौड़ से भरी जिंदगी से यहाँ के लोग काफी तनाव में रहते हैं ओर अनेक बीमारियों के शिकार भी हो जाते हैं। घर की समस्याएँ, दफ्तर का काम, बसों की भीड़, प्रदूषित हवा ये सब शहरी जीवन को कठिन बना रहे हैं।

डॉ. रमेश चन्द्र शाह के उपन्यासों में दिल्ली, मुम्बई, राजस्थान, बंगलौर, लखनऊ, देहरादून, ऋषिकेश तथा अमरकंटक आदि स्थानों को चित्रण हुआ है। उपन्यास के पात्र इन शहरों से संबन्ध रखते है। साथ ही शाह जी के उपन्यासों के पात्रों के माध्यम से विभिन्न देशों– जर्मनी, अमेरिका, जापान, इग्लैंड, आस्ट्रेलिया आदि के नाम उजागर हुए हैं। इन देशों में उपन्यास के पात्र का सेमिनार, रिसर्च, विजिटिंग तथा ट्रेनिंग आदि कार्यक्रम में भाग लेते हुए चित्रण किया गया है।

'किस्सा गुलाम' का पात्र कुन्दन डॉक्टरेट के लिए जर्मनी जाता है। वहीं अपने गुरू की कन्या एलिस के सम्पर्क में आता है। वर्षों के सम्पर्क के अन्त में वे दाम्पत्य में परिणत हो जाता है। इसी उपन्यास में कुन्दन के माध्यम से भारत के आदिवासी इलाकों का भी चित्रण हुआ है। कुछ समय बाद कुन्दन का स्वदेश यानी भारत से सम्पर्क एक 'आउटसाइडर' की तरह शोधकार्य के सिलसिले में आदिवासी इलाकों का दौरा होता है। यहीं से कुन्दन का हृदय परिवर्तन हो जाता है, अर्थात् अपने देश के प्रति प्रेम जागृत हो उठता है।

इसी प्रकार डॉ. शाह के उपन्यास 'असबाब–ए–वीरानी' में जर्मनी, अमेरिका आदि देशों का उल्लेख हुआ है। लेखक खुद रिसर्च के संबंध में जर्मनी जाते हैं। इस वाक्य से स्पष्ट होता है– "वहीं जर्मनी में ही मुझे उसके अर्थात् नीतीश के विवाह का निमंत्रण मिला।"[17] इसी उपन्यास का पात्र नीतीश का संबन्ध अमेरिका से है। वह भी रिसर्च के लिए अमेरिका जाता है। लेखक कहते हैं कि– "नीतीश ने पर्यावरण विज्ञान में महारत हासिल कर ली है। इसी विषय पर उसके एक शोधपत्र की ऐसी धूम मची थी कि एक अमरीकी विश्वविद्यालय ने उसे बाकायदा आंमत्रित भी किया और सम्मानित भी।"[18]

'सफेद परदे पर' उपन्यास में ध्यानचन्द्र के मित्र सप्रे आस्ट्रेलिया से लौट आये हैं और ध्यानचन्द्र को मिलने पहुंचता है। इस पर ध्यानचन्द्र कहते हैं– "पूरे छह माह बाद लौटे हैं आस्ट्रेलिया से। बेटा–बहू से मिलने गए थे दोनों।"[19]

'विनायक' उपन्यास में विनायक का रिश्ता विदेशों में काफी अच्छा है। विदेशों में उसकी खास पहचान है। विनायक के मित्र विनोद के इस कथन से स्पष्ट होता है– "मुझे पता है, तुम हाल मे ही पूरे साल भर की गेस्ट प्रोफेसरी जमा के आए हो वेल्श में। येट्स के स्पेशलिस्ट हो, तुम्हें कोई मेडल भी मिला है सुना, आयरलैंड की येट्स सोसाइटी की तरफ से, तो आयरलैंड भी गए ही होंगे। नामी–गिरामी विद्वानों से भी परिचय होगा ही तुम्हारा।"[20]

'विनायक' उपन्यास में वेल्श के पहाड़ एवं समुद्र के सौन्दर्य का चित्रण किया है है– "वेल्श में समुद्र ओर पर्वत का सान्निध्य एक साथ सुलभ था। पूरा एक साल मानो सपने सा गुजर गया।"[21]

'पुनर्वास' उपन्यास के पात्र दीनानाथ भी गई देशों का भ्रमण कर चुके हैं। इस वाक्य से स्पष्ट होता है– "प्रोफेसर नाथ के साथ अगर जाएगा तो सिर्फ यह सूटकेस जाएगा जो उनके साथ जर्मनी, हवाई द्वीप, अमरीका, जापान, कोरिया और न जाने कहाँ–कहाँ हो आया है और फिर भी इतना सारा आवागमन झेल चुकने के बाद भी उसकी चमड़ी के रंग से अभिन्न रहा आया है।"[22]

डॉ. शाह के पात्र जिस प्रकार विभिन्न देशों से सम्बंध रखते हैं उसी प्रकार देश के विभिन्न शहरों से भी जुड़े हैं। 'सफेद परदे पर' उपन्यास में ध्यानचन्द्र का बेटा कहता है– "पापा वो आपके दोस्त हैं ना– लखनऊ वाले विनयमोहन जी, उनका फोन आया था वे परसों सुबह यहाँ पहुंच रहे हैं और उसी रात को बंगलौर की गाड़ी पकड़ेंगे।"[23]

"बरसों छोटे–छोटे कस्बों में रहे आए– कोई कम्पनी नहीं, कोई गुंजाइश नहीं तरह–तरह के लोगों से मिलने की खुद अपनी संभावनाओं को ही जानने और परखने की। बम्बई आने के बाद ही

मालती को दुनियाँ कितनी बड़ी है, इसका अनुभव हुआ होगा।"[24]
'असबाब–ए–वीरानी' में लेखक का निवास गृह देहरादून है। लेखक कहते हैं–"जब नीतीश का विवाह हुआ, मैं जर्मनी में था। साल भर बाद लौटा। तभी नीतीश किसी कॉन्फ्रेंस के सिलसिले में देहरादून आया अनु भी साथ थी। रहे थे हमारे ही घर, पूरे हफ्ते भर और हम लोग साथ–साथ खूब घूमे–फिरे भी थे।"[25]
"राजस्थान का भी जिक्र हुआ है– "देहरादून से मैं राजस्थान आया था कभी अपने ही शुरू किये गये एक महत्वपूर्ण प्रोजेक्ट के ही सिलसिले में।"[26]
'गोबरगणेश' में विनायक अपनी पढ़ाई के लिए अल्मोड़ा से नैनीताल भेजा जाता है। वहाँ से नैनीताल तथा इलाहाबाद। वहाँ के परिवेश एवं वातावरण का चित्रण किया गया है। मुम्बई शहर का परिवेश भी शाह के उपन्यासों में चित्रित हुआ है। 'विनायक' उपन्यास का पात्र विनायक मुम्बई में अपने परिवार के साथ रहता है। मुम्बई विश्वविद्यालय में प्रोफेसर है। बुम्बई से नैनीताल, रानीखेत वहाँ से अल्मोड़ा किसी सेमिनार के लिए आते है। पात्रों के माध्यम से इन स्थानों का चित्रण बखूबी से हुआ है।
'पुनर्वास' उपन्यास में लखनऊ, हैदराबाद तथा अहमदाबाद का जिक्र हुआ है। कथानायक दीनानाथ का सम्बन्ध विभिन्न देश, विदेशों एवं शहरों से संबंध है। इस वाक्य से स्पष्ट होता है– "बरसों देश और विदेश में उनकी दुन्दुभि बजती रही है। पहले लखनऊ फिर हैदराबाद और अब अहमदाबाद में भी जहाँ विभागाध्यक्ष की कुर्सी सम्हाले हुए मुश्किल से तीनेक साल हुए होंगे, उनके कद्रदानों की कोई कमी नहीं।"[27]
डॉ. शाह का उपन्यास 'आखिरी दिन' एक अलग कथाकृति है जो हमारे इस आतंकवादी समय और परिवेश की जिस जीवन्त अन्तर्कथा को प्रसतुत करती है, उसे कोई भी सजग पाठक भीतर तक संवेदित और आंदोलित हुए बिना नहीं रह सकता। इस उपन्यास में जम्मू–कश्मीर एवं श्रीनगर के परिवेश एवं आतंकी वातावरण का चित्रण किया गया है। वहाँ के लोगों की कुंठा और मनोदशा का भी चित्रण हुआ है वहाँ के नवयुवक उचित अवसर ना मिल पाने के कारण भयानक आतंकवादी गुट में शामिल हो जाते हैं। इस उपन्यास में आतंकवाद और शहर में कर्फ्यू जैसे वातावरण का हृदय स्पर्शीय चित्रण किया है। आतंकी हमले, दंगों, फसादों के वातावरण का चित्रण किया गया है। "शहर में कर्फ्यू लगा हो, लोग भूखे मर रहे हो, तो शंकराचार्य की पहाड़ी उन्हें अपने पेट के भीतर से ऐसे कन्द–मूल जुटा दे जिन्हें खाकर वे अपनी भूख मिटा सके।"[28]
जम्मू–कश्मीर में आये दिन कर्फ्यू लगा रहता है। कथानायक इन्द्रजीत उन दिनों वहीं है। यह नजारा उसी के आँखों के सामने दिख रहा है। वहां के लोग शंकराचार्य की पहाड़ी से कन्दमूल फल खाकर अपना पेट भरते हैं। 'आखिरी दिन' उपन्यास में कफ्यू के दौरान जम्मू–कश्मीर तथा शंकराचार्य की पहाड़ी के वातावरण का चित्रण किया गया है–"आए दिन यहां कर्फ्यू लगा रहता है। सारी व्यवस्था ठप्प हो गई है। मैंने अपनी आँखों से देखा– बच्चों और बड़े–बूढ़ों को भी शंकराचार्य की पहाड़ी पर जड़ी बूटियों की तलाश में मारे–मारे फिरते। कोई दूसरा मुझसे कहता तो मुझे यकीन नहीं आता। पर अपनी आँखों–देखी पर अविश्वास भी कैसे करूं?"[29]
शहरी जीवन अनेक प्रकार की हलचलों से परिपूर्ण होता है। यहां शोर शराबा अधिक होता है। यहाँ के लोग अत्याधुनिक सुविधाओं का प्रयोग करते हैं। शहरी जीवन आडंबर और सुख सुविधाओं से युक्त होता है। यहाँ का हर मनुष्य आधुनिक यंत्रों से घिरा हुआ है। 'कम्बख्त इस मोड़ पर' उपन्यास में लेखक अपने छोटा बेटा जो मकैनिकल इंजीनियर बनने जा रहा है उससे कहता है– "आदमी एक मशीन है– वेशक गजब की बारीक मशीन। और, वैसी ही मशीनें वह अपने मशीनी दिमाग से ईजाद भी किए लेता है। तो इसमें कौन–सी ऐसी तारीफ की बात हुई? ये तो उल्टे, दोहरी गुलामी हो गई ना। एक तो भीतर इस अपने मन नाम के मायावी यंत्र की गुलामी! और दूसरे, अपने बाहर भी एक से एक भरी–भरकम या सूक्ष्मातिसूक्ष्म यंत्रों की गुलामी।"[30]
शहरी परिवेश में लोग परिश्रमी होते हैं तथा हर समय व्यस्त रहते हैं। लोगों के पास पड़ोसियों, मित्रों तथा रिश्तेदारों से मिलने का कम समय रहता है। हर कोई अपनी चिंता और पेरशानियों में घिरा दिखाई देता है। यहाँ का परिवार एकाकी होता है इसका उदाहरण 'विनायक' उपन्यास के इस वाक्य में मिलता है– "शकुंतला का बेटा अपनी माँ को अमरीका बुला रहा है पर शकुंतला उत्साहित नहीं है बिलकुल। शकुंतला अपने साथ रहना जानती है। अकेले पड़ जाने से सभी डरते हैं। बिरला ही कोई इतना मजबूत और स्वावलम्बी होगा जैसी यह शकुंतला नाम की जीव है।"[31]
'विनायक' उपन्यास में इसका स्पष्ट उदाहरण मिलता है। विनायक का परिवार बम्बई शहर में रहता है। वहाँ परिवार के किसी भी सदस्य को एक दूसरे के लिए समय नहीं है। सभी अपने–अपने कामों में व्यस्त हैं। बच्चे अपनी पढ़ाई और कैरियर बनाने में व्यस्त हैं तो पत्नी अपनी नौकरी और अन्य कार्यों में व्यस्त है। विनायक चाहता है वह अपने बच्चों परिवार के साथ कुछ समय के लिए अपनी जन्मभूमि कुमाऊँ घूम आएं और अपने घर परिवार के लोगों और मित्रों से मिल लेंगे। लेकिन बच्चों एवं पत्नी के पास समय नहीं है। बच्चों को आगे की पढ़ाई के लिए विदेश जाना हैं। इसलिए बच्चे पहाड़ जाने के लिए मना कर देते हैं– "इट्स इम्पॉसिबल पापा! तुम कैसी बात कर रहे हो? हमारे पास वक्त ही कहाँ बचा है। देख ही रहे हो, कितने काम अभी सुलटाने हैं।"[32]
समय निकालने के लिए कहने पर, "कैसे निकाले? हमें इक्कीस मार्च की फ्लाइट पकड़नी है। कैसे होगा? और इससे फायदा क्या? इस अफरातफरी में एन्ज्वाय क्या करेंगे? कुछ तो कॉमनसेंस से काम लो पापा!"[33]
शहर की चकाचौध तथा भागादौड़ी जिन्दगी में किसी को परिवार के मसलों पर बैठकर चर्चा करने का वक्त नहीं होता यहाँ तक की घर का बड़ा बेटा अपने बूढ़े माता–पिता की देख–भाल भी नहीं कर सकता क्योंकि उसके पास वक्त नहीं है। उनसे सलाह लेना तो दूर की बात है। विवाह जैसे मांगलिक कार्यों के लिए भी सलाह लेने की जरूरत नहीं समझते आधे घंटे में ही शादी निबटा लेते हैं।
'कम्बख्त इस मोड़ पर' उपन्यास में लेखक अपने छोटे बेटे को पत्र लिखते हुए कहता है– "शादी भी कैसी मंगलम्–मंगलम्। तुम्हारे भाई साहब, सुना, खुद ही जाके एक मंदिर के पुजारी से बात कर आए हैं। बस माला बदल लेंगे। कोई धूम–धड़ाका नहीं। उसी शाम को एक आलीशान होटल में दोनों तरफ के खासुलखास लोगों को 'रिसेप्शन' भोज दे दिया जाएगा। यानी कि हमें– दूल्हे के पिताश्री को कुछ नहीं करना है। सारा इंतजाम मदर सुपीरियर को कॉनफिडेंस में लेके निपटाया जा चुका है।"[34]
शहरों में कुछ लोगों के पास तो जीवन यापन के असीम साधन होते हैं परन्तु कुछ लोग इतने दरिद्र होते हैं कि उन्हें गन्दी बस्तियों में शरण लेनी पड़ती है। यहाँ एक तरफ आर्थिक विषमता है तो दूसरी तरफ प्रदूषण व गंदगी भी है। अधिकतर शहरों में वायु और ध्वनि प्रदूषण चरम सीमा पर है। लोगों को जल के अभाव का सामना करना पड़ता है। फिर भी लोग शहरों में रहना चाहते हैं क्योंकि यहाँ अच्छे शिक्षा केन्द्र, बड़े–बड़े अस्पताल, यातायात के आधुनिक साधन एवं मनोरंजन के सभी साधन होते हैं। यहाँ रोजगार प्राप्ति के भी अच्छे अवसर होते हैं। इस प्रकार शहरी जीवन में कुछ

आराम है तो कुछ परेशानियाँ भी हैं।

शहरों में उच्च शिक्षा प्राप्त करने के बड़े–बड़े अवसर मिलते हैं विनायक का बेटा "बड़कू (भाष्करानंद) का पासपोर्ट तैयार है। इसी सप्ताह उड़ान भरनी है उन्हें। बड़कू ने अभी इसी वर्ष आई.आई.टी. मुम्बई से टॉप किया है और अब आगे की रिसर्च डिग्री उन्हें अमरीका की सुप्रसिद्ध कॉर्नेल यूनिवर्सिटी से लेनी है। दाखिला आसानी से मिल गया। साथ में वजीफा जैसा भी कुछ।"[35]

"छोटे भाई सुदर्शन ने बंगलौर से बिजनेस मैनेजमेन्ट की उपाधि प्राप्त की है। उन्हें भी सिंगापुर की कोई अंतर्राष्ट्रीय कम्पनी बहुत महंगे दामों पर खरीद रही है। दोनो भाई एक ही दिन दो विपरीत दिशाओं में उड़ेंगे।"[36]

अगर हम शहरी जीवन के जीते जागते उदाहरणों की पड़ताल करें तो निष्कर्ष यही निकलता है कि शहरी जीवन व शहरी परिवारों के सुख नितान्त एकांकी है। केवल व केवल अपने परिवार तक सिमटा होता है। शहरी परिवार को पारिवारिक स्वतंत्रता व स्वच्छन्दता की दृष्टि से सुख की परिभाषा में शामिल कर लेता हैं लेकिन परिवार के व्यापक संदर्भ में व जिम्मेदारियों से कतराने का संस्कार भी अपनी पीढ़ी को देता है। जबकि अपेक्षाकृत छोटे नगरों में परिवार को साथ लेकर चलने का संस्कार सुख का स्रोत बन जाता है। 'कम्बख्त इस मोड़ पर' उपन्यास में इसका उदाहरण मिलता है। लेखक अपने छोटे बेटे को पत्र लिखकर बताता है– "तुम्हारे भाई अब मुझसे ऊबने, चिढ़ने, कुढ़ने लगे हैं और यह ऊब यह चिढ़ उनके चेहरे पर उनके हावभाव से साफ जाहिर हो जाती है वे इसे छुपाने की शिष्टता तक नहीं बरतते।... अब वे सिर्फ अपने कॉलेज, अपने विभाग की ही किसी टुच्ची सी बात को लेकर मरी सलाह मांगने का नाटक करते हैं मानो मैं उनका बाप नहीं उनका बॉस हूँ।"[37]

विश्व की कोई भी सभ्यता कभी भी केवल चंद शहरों की धरोहर नहीं रही। सभ्यता का हर सफर उसके महत्वपूर्ण गुणों के साथ शुरू होता है और उसके बल पर आगे बढ़ता है। मानवता के गुण जितनी सहजता से छोटे नगरों–शहरों एवं गांव में मिलते हैं महानगरों में नहीं मिलते। इसका उदाहरण डॉ. रमेश चन्द्र शाह के उपन्यासों में बहुत अच्छे से मिलता है।

परिवार के बुजुर्ग युवाओं के प्रति वो युवा वर्ग बुजुर्गों के प्रति जिम्मेदारियों के साथ जुड़ा हुआ होता है। इसके परिणाम इस जुड़ाव की आन्तरिक ऊर्जा व सही आनन्द का अहसास सुखी व गम के पलों में सिद्दत से महसूस होती है। उसे सुख के साथ–साथ सभ्यता का स्रोत भी कहना होगा। लेकिन शहरों में लोग बुजुर्गों के प्रति कम ध्यान दे पाते हैं। 'कम्बख्त इस मोड़ पर' उपन्यास में इसका उदाहरण मिलता है लेखक अपने बड़े बेटे के लिए कहता है– "उनके भी रंग–ढंग किस कदर बदले हुए हैं। मुझसे सीधे मुंह बात तक नहीं करते बेवजह मुंह फुलाए रहते हैं। कतराते–छिपते फिरते हैं मुझसे–मानों मैं उनका कुछ लूटे ले रहा हूँ। मेरे पास बैठना तक उन्हें भारी पड़ने लगा है और...अब जीवन के सबसे नाजुक और निर्णायक मोड़ पर उन्होंने मुझे 'दूध की मक्खी' की तरह निकाल फेंका है।"[38]

खरीदे गये सुख, शहरी उत्पाद की तरह गाँव में भले ही उपलब्ध ना हों, लेकिन पर्यावरण व वातावरण से प्राप्त नैसर्गिक सुखों की महक तो शहरों से अलग होकर ही महसूस की जा सकती है प्राकृतिक पर्यटन स्थलों की महक को महानगरीय या शहरी वातावरण में खोज पाना कहाँ संभव है? क्योंकि मन को प्राकृतिक रंगों की छटा हरबार लुभाती है। 'विनायक' उपन्यास में प्रो. विनायक, मालती एवं शकुतला बम्बई से किसी सेमिनार के लिए नैनीताल आते है और रानीखेत में अपने मित्र के यहाँ ठहरते हैं। वह रानीखेत के आस–पास के जगह और वहां से अल्मोड़ा जहां विनायक को पुस्तैनी घर है आते हैं। अल्मोड़ा के कई स्थानों एवं गाँव का भ्रमण करते हैं और वहां की सुरम्य प्राकृतिक दृश्यों का आनन्द लेकर रोमांचित हो जाते हैं। शकुंतला बुम्बई के शोर–शराबे से दूर एकांत में प्रकृति की गोद में चारों तरफ फैले विशाल वृक्षों के बीच अपने आप को रमा देती है। उसे वहां सुकून मिलता है।

योग्यता को पाने के लिए शहरों की ओर जाना पराक्रम का एक हिस्सा है, लेकिन सुख, सभ्यता, सुविधा के नाम पर अपनी जड़ों से अलग हो जाना, शहर जाने का स्वच्छंदता पाने का बहाना ही होता है। स्वयं के साथ किये गये ऐसे बहाने समय निकल जाने क बाद सिर्फ पछतावा ही देते हैं। 'किस्सा गुलाम' उपन्यास में इसका उदाहरण मिलता है। नारायण राम का मन गाँव में ही नौकरी करने में नहीं लगता वह शहर में जाना चाहता है। वह शहर भी चला जाता है। कुछ समय बाद वह अपने गाँव ही वापस आ जाता है।

शहरों में महिला–पुरुष दोनों का जीवन संघर्षमय होता है। वह अपने–अपने व्यवसायों और नौकरी करने में व्यस्त रहते हैं। सुबह से शाम तक अपने काम में लगे रहते हैं। किसी को दूसरों के लिए फुरसत ही नहीं होती किस कदर महिलाएं भी अपने कारोबार में व्यस्त रहती हैं इस वाक्य से स्पष्ट होता है विनायक लच्छू से कहता है–"मालती तो यहाँ आने से रही। कितना बड़ा कारेबार है उसका बम्बई में– तू क्या जान! मेरे पीछे वह अपना जमा–जमाया कारोबार बंद करके इस उजाड़ में मरने क्यों आएगी?"[39]

विनायक उपन्यास में विनायक की पत्नी मालती एक संस्था चलाती है उसकी सेवा में दिन–रात लगी रहती है। लच्छू के पूछने पर वह बताती है कि "मैं बम्बई में कोई दस बरसों से वेश्याओं के पुनर्वास का काम कर रही हूँ। आश्रम और स्कूल भी चला रही हूँ उनके बच्चों के लिए! समझे? आपसे भी चन्दा वसूलूँगी, अब आप ही तय कीजिए, इतना बड़ा कारोबार क्या मैं इसलिए बंद कर दूँ कि... इन्हें अपने बचपन को अपने बुढ़ापे से वसूल करने का शौक चर्याया है।"[40]

शहरों में घर चलाने तथा बच्चों की अच्छे कैरियर के लिए खर्चा उठाना एक मध्यमवर्गीय परिवार के लिए आसान नहीं है। शाह के उपन्यासों में अधिकतर स्त्री–पुरुष पात्र या पति–पत्नी दोनों नौकरी पेसा वाले हैं। सामान्यतः लड़के–लड़की के विवाह के लिए नौकरी वाले वर–वधु ही देखे जाते हैं। शहरों में तो लड़का या लड़की अपनी पसंद के लड़की या लड़के खुद चुनते हैं। 'कम्बख्त इस मोड़' उपन्यास में लेखक का बड़ा वाला बेटा कॉलेज में प्रोफेसर है उसने उसी कॉलेज में पढ़ाने वाली लड़की को चुना है। लेखक अपने छोटे बेटे को पत्र लिखते हुए कहता है– "तुम्हारी भाभी साहिबा भी उसी कॉलेज में पढ़ाती हैं जहाँ तुम्हारे भाई साहब पढ़ा रहे हैं।"[41]

## निष्कर्ष

बहुमुखी प्रतिभा के धनी शाह जी का रचना संसार वैविध्य पूर्ण है। उन्होंने उपन्यास, कहानी, लोक साहित्य, निबन्ध, संपादन तथा साहित्य की अन्यान्य विधाओं पर सफलता पूर्वक लेखनी चलाई है। शाह के कथा साहित्य में भारतीय लोकजीवन एवं ग्राम्य जीवन की विविध रूपों में अभिव्यक्ति हुई है। निम्न–मध्य वर्ग की पीड़ाओं को उन्होंने बड़ी सहजता से अपने उपन्यासों के द्वारा स्वर दिया है। शाह जी ने साहित्य को आंचलिक तत्वों से समन्वित कर विविध जीवन मूल्यों का उद्घाटन किया है।

'गोबर गणेश' उपन्यास में मूल संवेदना की अभिव्यक्ति हुई है। जिस ग्राम्य व शहरी जीवन के यथार्थ को उन्होंने देखा–भोगा उसी का प्रमाणिक दस्तावेज उनका उपन्यास है। डॉ. शाह हिन्दी साहित्य

जगत के एक सर्वाधिक अनुभव सम्पन्न उर्वरता से युक्त रचनाकार हैं। साहित्य को नया रचनात्मक आयाम प्रदान करके साहित्य जगत में सर्वोत्कृष्ट स्थान पर आरूढ़ होने के अधिकारी हैं। निःसंदेह वे आधुनिक कथा साहित्य के युग चेतना साहित्यकार थे, जिन्होंने हिंदी कथा साहित्य को प्राणवान एवं ऊर्जावान बनाया है।

डॉ. शाह ने समाज के प्रत्येक वर्ग की पीड़ा को अपने उपन्यास में सहेजा है। प्रत्येक वर्ग के क्रिया–कलाप उनके उपन्यासों में चित्रित हैं। शाह के उपन्यास देश काल एवं वातावरण के अनुरूप एक उत्कृष्ट रूप प्रदान किये हुए है। विभिन्न परिस्थितियों एवं माहौल के अनुरूप पात्रों का चित्रण किया है। आवश्यकता के अनुरूप ही परिस्थितियों को उजागर किया है।

**संदर्भ ग्रन्थ सूची**


1. पुनर्वास, पृ. 22।
2. गोबरगणेश, पृ. 55।
3. किस्सा गुलाम, पृ. 63।
4. वही, पृ. 60।
5. पुनर्वास, पृ.. 21।
6. विनायक, पृ.. 243।
7. पुनर्वास, पृ. 15।
8. गोबरगणेश, पृ.. 12।
9. वही, पृ. 128।
10. वही, पृ. 48।
11. वही, पृ. 48।
12. किस्सा गुलाम, पृ. 66।
13. वही, पृ. 66।
14. गोबरगणेश, पृ. 206।
15. वही, पृ. 142।
16. वही, पृ. 140।
17. असबाब–ए–वीरानी, पृ. 33।
18. वही, पृ. 33।
19. सफेद परदे पर, पृ.. 36।
20. विनायक, पृ. 149–50।
21. वही, पृ. 53।
22. पुनर्वास, पृ. 9।
23. सफेद परदे पर, पृ. 30।
24. विनायक, पृ. 26।
25. असबाब–ए–वीरानी, पृ. 32।
26. वही, पृ. 33।
27. पुनर्वास, पृ. 9।
28. आखिरी दिन, पृ., 27।
29. वही, पृ. 26।
30. कम्बख्त इस मोड़ पर, पृ. 15–16।
31. विनायक, पृ. 255।
32. वही, पृ. 42।
33. वही, पृ. 42।
34. कम्बख्त इस मोड़ पर, पृ. 82।
35. विनायक, पृ. 83।
36. वही, पृ. 83।
37. कम्बख्त इस मोड़ पर, पृ. 34।
38. वही, पृ. 68।
39. विनायक, पृ. 220।
40. वही, पृ. 220।
41. कम्बख्त इस मोड़ पर, पृ. 82।